10-07-2020

Dr. Purnima Singh
Department of Political Science
B.A 2nd year part-2 Comp Contemporary
World Politics. Topic - Environment
Lecture - 62

Environment - 1

राजनीति का तात्पर्य सामान्य अर्थ में, सत्ता व सत्ता के लिए संघर्ष से है। अतः पुराने दृष्टिकोण के अनुसार विश्व राजनीति का सरोकार राज्यों के बीच अन्तःक्रियाओं से है जिनके कारण युद्ध होते है तथा शान्ति बनाए रखने हेतु सन्धियाँ की जाती है। लेकिन नए दृष्टिकोण के अनुसार विश्व राजनीति के अध्ययन में कुछ अन्य मुद्दों को भी शामिल किया जाना चाहिए (जैसे - पर्यावरण की सुरक्षा, प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग, दरिद्रता, बेकारी, जनसंख्या वृद्धि, शरणार्थियों की समस्या आदि) राज्य की सुरक्षा का मात्र यह अर्थ नहीं है कि उसे शत्रुओं के प्रहार से बचाया जाए, यह भी जरूरी है कि बढ़ती हुई जनसंख्या, दरिद्रता, अल्पसंख्यकों व शरणार्थियों की समस्या तथा देश के भीतर विघटनकारी शक्तियों का निराकरण किया जाए, अन्यथा वे सुरक्षा की समस्या को जटिल बना देंगी, पर्यावरण की सुरक्षा भी ऐसा ही एक मुद्दा है।

पर्यावरण विज्ञान बहुत पुराना है, धर्म ग्रन्थों में प्राकृतिक शक्तियों (जैसे - सूर्य, चन्द्रमा, वायु, अग्नि आदि) तथा प्राकृतिक वस्तुओं (जैसे - पर्वत, नदियाँ, वृक्ष, पशु, पक्षी आदि) का पूजन निर्धारित किया गया है, इसके पीछे यही विचार है कि मनुष्य को अपने जीवन की सुरक्षा की खातिर प्राकृतिक शक्तियों व तत्वों का आदर करना चाहिए। इस बारे में लोगों की जानकारी बीसवीं शताब्दी के सातवें दशक में हुई जब वैज्ञानिकों ने अंटार्कटिका पर बर्फ पिघलने के लक्षण

की गम्भीर चिन्ता से देखा। उन्होंने इसका कारण विश्व में बढ़ते हुए-हुए तापमान में ढूंढा और यह निष्कर्ष निकाला कि यदि बर्फ पिघलती चली गयी तो नदियों के जल का स्तर ऊँचा हो जायेगा जो प्रलय का कारण बनेगा। उनकी खोज के अनुसार पृथ्वी से उठने वाली गैसें अन्तरिक्ष की ओजोन परत (ozone layer) में छेद कर रही है जिससे सूर्य की किरणें पृथ्वी के उस भाग पर सीधी मार कर रही है। अतः यह जरूरी है कि ऐसी गैसों के उत्सर्जन को रोककर ओजोन परत को विनाश से बचाया जाए।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने इस ओर विशेष ध्यान दिया। जून 1972 में स्वीडन के नगर स्टॉकहोम में इस विषय पर एक सम्मेलन (United Nations Conference on Human Environment) हुआ जिसमें 113 देशों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में यह निर्णय लिया गया कि वर्तमान व भावी पीढ़ियों को बचाने के लिए पर्यावरण को सुरक्षित किया तथा सुधारा जाये। 109-सूत्रीय कार्य योजना तथा एक 26-सूत्रीय घोषणा अपनाई गई जिसमें कहा गया कि पर्यावरण को सुरक्षित रखना तथा उसका सुधार करना सभी देशों व सभी लोगों का दायित्व है। इस अवसर पर 'मात्र एक पृथ्वी' (only one Earth) का मन्त्र अपनाया गया तथा कार्य योजना को लागू करने हेतु केन्या के नगर नैरोबी में एक लघु सचिवालय की स्थापना की गई।

अभियान चलता रहा। 28 अक्टूबर, 1982 को संयुक्त राष्ट्र की महासभा ने प्रकृति हेतु विश्व घोषणापत्र (World Charter for Nature) अपनाया जिसमें कहा गया कि "प्रकृति का सम्मान किया जायेगा तथा उसकी अनिवार्य प्रक्रियाओं को

क्षति नहीं पहुँचाई जाएगी।" संयुक्त राष्ट्र की महासभा ने पर्यावरण व विकास पर विश्व आयोग (World Commission on Environment and Develop-ment) का गठन किया। इसने 22-सूत्रीय कार्यक्रम तैयार किया जिसे जून 1986 के हेग सम्मेलन में पास किया गया। इसमें कहा गया कि सभी राज्य यह सुनिश्चित करेंगे कि पर्यावरण व प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखा जायेगा तथा वर्तमान व भावी पीढ़ियों के लिए उनका उपयोग किया जाएगा। इस आयोग की अध्यक्ष नॉर्वे की पूर्व प्रधानमंत्री ब्रुण्डटलैण्ड थी, इसीलिए इसे ब्रुण्डटलैण्ड आयोग (Brundtland Commission) भी कहते हैं। 1987 में इसकी रिपोर्ट आई जिसका शीर्षक था - हमारा साझा भविष्य (Our Common Future), इसमें आग्रह किया गया कि विश्व के सभी राज्य पर्यावरण के सन्तुलन को बनाए रखें तथा अपना विकास इस प्रकार करें जो टिकाऊ हो व किसी अन्य राज्य के लिए घातक न हो।

इसी आयोग की सिफारिशों पर सविस्तार विचार करने हेतु जून 1992 में ब्राजील की राजधानी रियो डी जेनेरो में एक सम्मेलन हुआ जिसे पृथ्वी शिखर सम्मेलन (Earth Summit) का नाम दिया गया। इसमें 172 राज्यों के अलावा अनेक गैर-सरकारी संगठनों ने भी भाग लिया। इस अवसर पर 21वीं शताब्दी के लिए एक विशाल कार्यक्रम (Agenda-21) पास किया गया।

Agenda-21

1. पर्यावरण व विकास के बीच सम्बन्ध के मुद्दों को समझा जाये।
2. ऊर्जा का अधिक कुशल तरीके से इस्तेमाल किया जाये।
3. कृषकों को पर्यावरण सम्बन्धी जानकारी दी जाये।
4. प्रदूषण फैलाने वालों पर भारी जुर्माना लगाया जाये।
5. इस बारे राष्ट्रीय योजनाएँ बनाई व लागू की जायें।